आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य

सम्पूर्ण स्वास्थ्य का विज्ञान एवं दर्शन

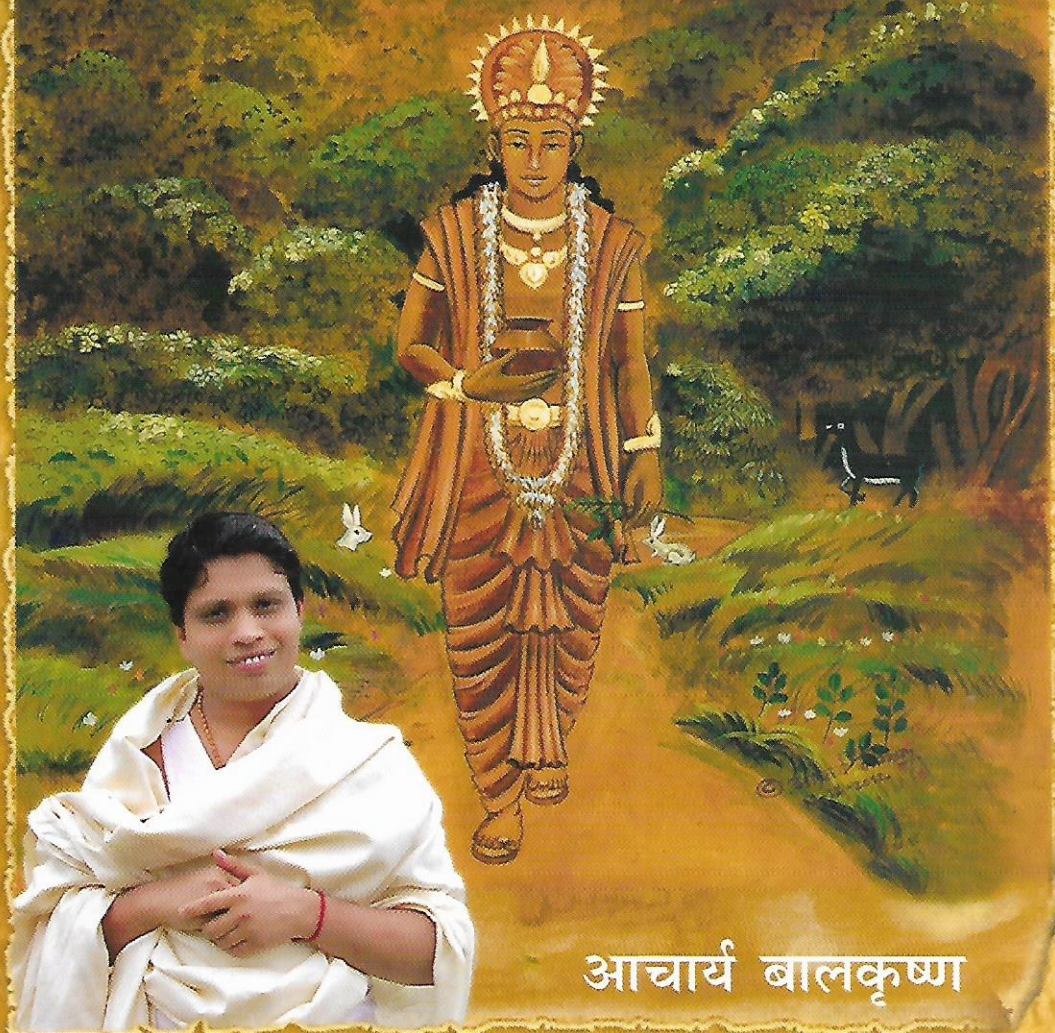

आचार्य बालकृष्ण

प्रकाशक **दिव्य प्रकाशन**
दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट
पतंजलि योगपीठ, महर्षि दयानन्द ग्राम
दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग,
निकट बहादराबाद, हरिद्वार - 249 402 (उत्तराखण्ड)

आईएसबीएन 978-81-89235-47-5

ई-मेल divyayoga@rediffmail.com

वेबसाइट www.divyayoga.com

दूरभाष 91-1334-244107, 240008, 246737

फैक्स 91-1334-244805

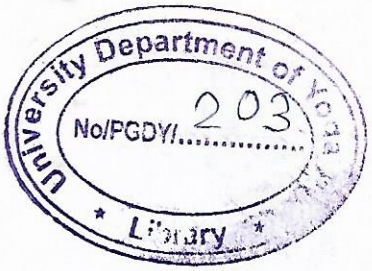

सर्वाधिकार © **प्रकाशकाधीन** भारतीय कॉपीराइट एक्ट के तहत इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री का स्वत्वाधिकार दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति या संस्था के लिए पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिजाइन एवं प्रकाशित लेख इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका या समाचार पत्र में प्रकाशित करने के पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है। अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे खर्चे के लिए जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकद्दमे के लिए न्यायक्षेत्र हरिद्वार ही होगा।

प्रकाशित (हिन्दी एवं अंग्रेजी) संस्करण 1,00000 प्रतियाँ, (फरवरी 2006 से 2012 तक)

विशेष संस्करण प्रथम मार्च 2013, 30,000 प्रतियाँ (परिष्कृत व परिवर्धित एवं अनेक हस्तचित्रों से सुसज्जित)

द्वितीय संस्करण सितम्बर 2013, 50,000 प्रतियाँ

तृतीय संस्करण दिसम्बर 2014, 50,000 प्रतियाँ

मुद्रक

mpprinters

आवरण पृष्ठ के चित्र का परिचय

आवरण पृष्ठ पर मुद्रित चित्र भगवान् धन्वन्तरि का है, जिन्हें आयुर्वेदिक ओषधियों का देवता एवं भूमण्डल पर आयुर्वेद का प्रथम आचार्य तथा जनक माना जाता है। चित्र में उनके एक हाथ में अमृतकलश तथा दूसरे हाथ में ओषधि है। यह भगवान् धन्वन्तरि की चलने की मुद्रा में चित्रित प्रथम आलेख्य कृति है।

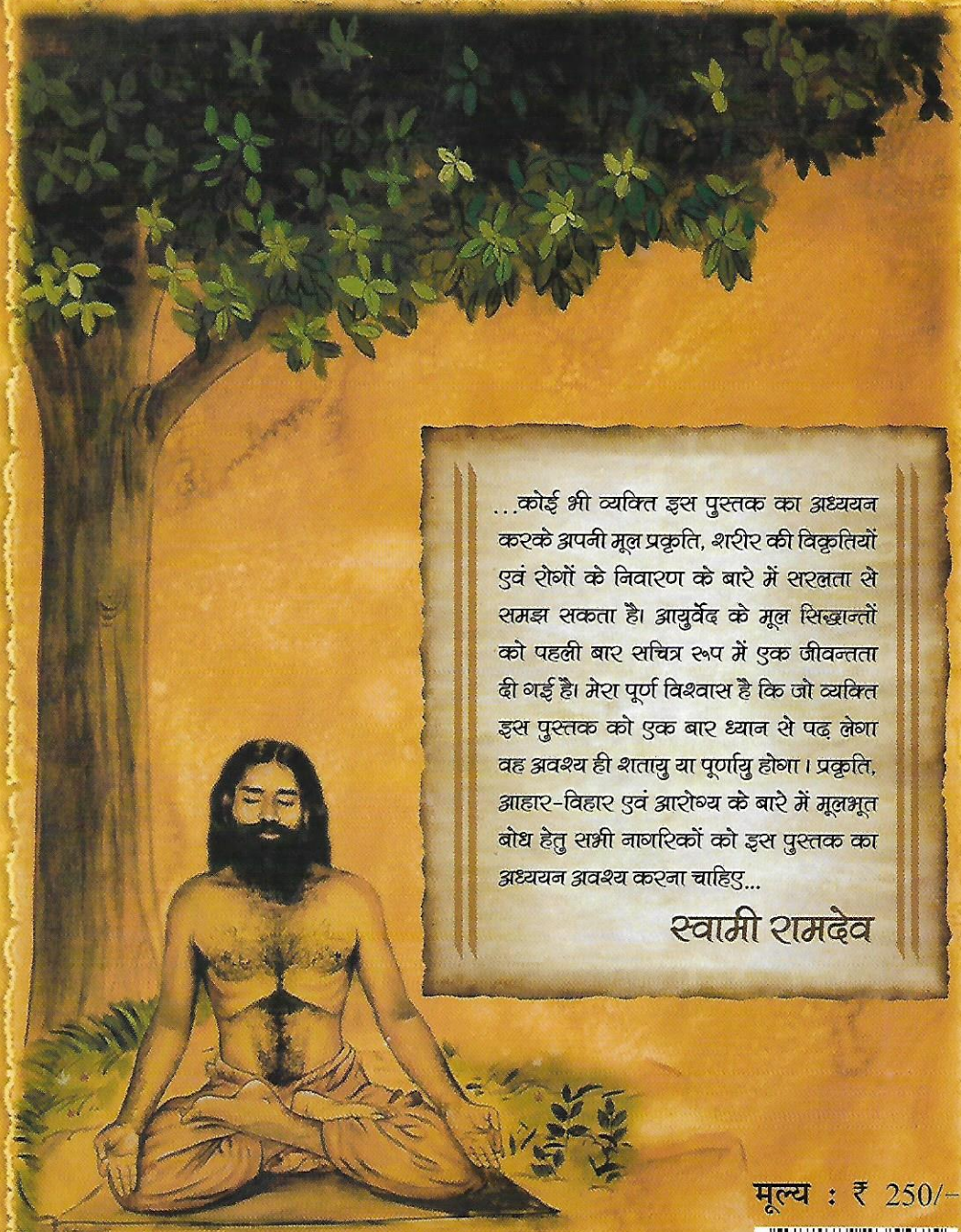

...कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक का अध्ययन करके अपनी मूल प्रकृति, शरीर की विकृतियों एवं रोगों के निवारण के बारे में सरलता से समझ सकता है। आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों को पहली बार सचित्र रूप में एक जीवन्तता दी गई है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि जो व्यक्ति इस पुस्तक को एक बार ध्यान से पढ़ लेगा वह अवश्य ही शतायु या पूर्णायु होगा। प्रकृति, आहार-विहार एवं आरोग्य के बारे में मूलभूत बोध हेतु सभी नागरिकों को इस पुस्तक का अध्ययन अवश्य करना चाहिए...

स्वामी रामदेव

मूल्य : ₹ 250/-

9 788189 235475

"आरोग्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

स्वामी रामदेव